Impact Factor :- 7.245 (SJIF) ISSN 2349-1027

International Registered and Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INDO WESTERN RESEARCHERS

(UGC Approved, Peer Reviewed & Refereed Indexed Research Journal)

(Year -XIII, Issue - XXV, Vol. - II : Feb. 2026 To July 2026) Special Issue

Vidya Vikas Mandal Pathrud's

SHANKARRAO PATIL MAHAVIDYALAYA, BHOOM

Tq. Bhoom, Dist. Dharashiv-413504 (Maharashtra)

(NAAC Re - Accredited B++ Grade with CGPA 2.77)

Affliated to Dr. B. A. M. University Sambhajinagar

Sponsored by

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Chhatrapati Sambhajinagar, (M.S.) India

Two Days National Symposium

On

Post-Pandemic Reflections in Literature & Media

(Special Emphasis on Marathi, Hindi & English Languages)

March 4 & 5, 2026

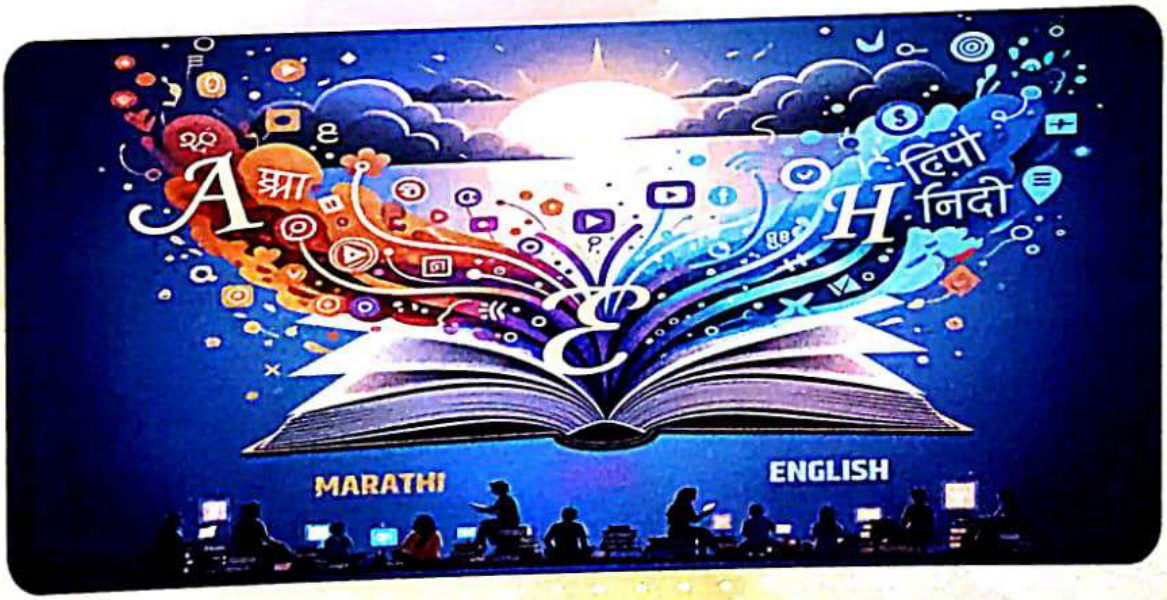

Editor In Chief

Dr. Anuradha S. Jagdale

IMPACT FACTOR 7.245 SJIF

ISSN 2349-1027

International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for All Subjects

INDO WESTERN RESEARCHERS

UGC APPROVED, REFERRED & PEER REVIEWED INDEXED RESEARCH JOURNAL

Issue : XXV, Vol. II
Year-XIII, Bi-Annual(Half Yearly)
(Feb. 2026 To July 2026)

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Website
www.jpiap.com

Contact : - 8484818000
09423346913 / 09637935252
09503814000 / 07276301000

E-mail :
visiongroup1994@gmail.com
irasg1411@gmail.com
interlinkresearch@rediffmail.com

Published by :
Indo Asian Publication,
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price : ₹ 400/-

EDITOR IN CHIEF

Dr. Anuradha S. Jagdale
Principal
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

EDITORS

Dr. Gokul H. Surwase
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Mr. Gautam U. Tijare
Head, Dept. of Marathi,
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

Dr. Santosh B. Bhandwalkar
Head, Dept. of Hindi,
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

Dr. Rajshree L. Taware
Dept. of Hindi,
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

Disclaimer: This is a Special Issue of the journal published in association with the conference. Selected papers have been published after peer review. The journal's ISSN and periodicity remain unchanged.

ISSN : 2349-1027
INDO WESTERN RESEARCHERS
IMPACT FACTOR 7.245 SJIF
Feb. 2026 To July 2026
Issue - XXV, Vol - II (Special Issue)

अ. क्र.	अनुक्रमणिका	पेज. नं.
1	महामारी के बाद साहित्य में अलगाव, पहचान और आत्मबोध डॉ. राम शरण सेठ	1
2	महामारी पश्चात हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श (एक समकालीन अध्ययन) डॉ. अप्पासाहेब टाळके	3
3	वैश्विक महामारी के बाद हिंदी साहित्य में संवेदना और मानवीय मूल्य का चित्रण डॉ. दत्ता साकोळे	6
4	महामारी के बाद का साहित्य : मानवीय संवेदना और मूल्य डॉ. नंदा बाळकृष्ण उबाळे	9
5	भारतीय संस्कृति पर मीडिया का प्रभाव डॉ. मंत्री रामघन आडे	12
6	हिंदी साहित्य ग्रंथालय का इतिहास और वर्तमान स्वरूप डॉ. मीना साहेबराव खरात	17
7	महामारी के बाद के साहित्य में मजदूरों की समस्या डॉ. ललिता राठोड	21
8	वैश्विक महामारी और मीडिया का बदलता रूप डॉ. शीतल श्रीनिवास बियाणी	25
9	हिंदी कविताओं में फूलों का चित्रण प्रा. डॉ द्वारका गिते-मुंडे	28
10	हिंदी काव्य में महामारी का चित्रण : कोरोना के विशेष संदर्भ में प्रा. डॉ. रामहरी काकडे	31
11	कोरोना महामारी से प्रभावित जन जीवन का हिंदी चलचित्रों में चित्रण प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ	36
12	कोविड-19 और अशोक वाजपेयी की कविता प्रा. डॉ. सय्यद अमर फकीर	40
13	महामारी के बाद के हिंदी साहित्य में व्यक्त मानवीय मूल्य प्रा. डॉ. शिवहार भुजंगराव साळुंके	44
14	आपदा-कालीन यथार्थ : हिंदी प्रिंट, डिजिटल मीडिया और साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रा. शफीक लतीफ चौधरी	49
15	चित्रा मुद्गल लिखित 'लॉकडाऊन' कहानी में अभिव्यक्त पारिवारिक जीवन और स्त्री प्रा.डॉ. चित्रा धामणे	51
16	आपदा समय और हिंदी साहित्य प्रा.डॉ. संजय व्यंकटराव जोशी	54
17	'समय, साहित्य और समाज'(कविता के विशेष संदर्भ में) प्रो.डॉ. अलका गडकरी	56
18	वैश्विक महामारी और मजदूर वर्ग प्रोफेसर डॉ. शाम बबनराव सानप	58

ISSN : 2349-1027
INDO WESTERN RESEARCHERS
Impact Factor 7.245 SJIF
Feb. 2026 To July 2026
Issue : XXV, Vol : II (Special Issue)

16.
आपदा समय और हिंदी साहित्य

प्रा. डॉ. संजय व्यंकटराव जोशी
व्यंकटेश महाजन वरीष्ठ महा विद्यालय, धाराशिव

भारत देश में आज तक विभिन्न आपदाओं से जूझते हुए इंसान को हमने देखा है और हमेशा उस परिस्थिति से इंसान उभरता रहा है. शायद संघर्ष से उभरकर उसने आगे बढ़ना सीखा है। यह गुण उसके खून में है। यह भारतीय प्राचीन परंपरा और उसके मूल्यों की शक्ति है। जो बार बार इंसान को प्रेरित करती रहती है। और उसको आगे बढ़ाने की कोशिश करती है। मनुष्य के जन्म से लेकर आज तक मनुष्य संघर्ष की गाथा को ही प्रस्तुत करता रहा है। मूलतः मनुष्य के प्रवृत्ति संघर्षशील है। सामान्यत आपदाओं का स्वरूप प्राकृतिक और मानव निर्मित होता है। प्राकृतिक आपदाओं का तो कोई इलाज नहीं है। लेकिन मानव निर्मित आपदाओं को लेकर हमेशा से विचार चिंतन होता रहा है लेकिन ये आपदाएं आज तक कम नहीं हुई हर क्षेत्र मे इन आपदाओं को लेकर विचार विमर्श होता रहा है। साहित्य ने भी हमेशा इस संकट और परेशानी को व्यक्त करने का प्रयास किया है। हिंदी साहित्य ने हमेशा धैर्य बांधते हुए लोगों में साहस जगाने का प्रयास किया है। साथ ही मानवीय संवेदनाओं को उजागर करने का प्रयास किया है। साहित्य में हमेशा विभिन्न आपदाओं का वर्णन साहित्यकार करते रहे जिसमें महामारी, बाढ़, सूखा, युद्ध जैसी आपदाओं का समावेश है। साहित्य ने सामाजिक दायित्व की भूमिका हमेशा से निभाई है। जिससे संकट के समय में मनुष्य को समय पर धैर्य मिला है। मानव निर्मित संकटों से भी जूजते हुए आज हम यहाँ तक आये हैं। हजारों सालों की इसकी भी अपनी परंपरा है। जिसमें मनुष्य आपस में संघर्ष विभिन्न कारणों से करता रहा है। स्वार्थ, राजनीति, संपत्ति, लालच इत्यादि कारणों से मनुष्य एक दूसरे पर हमले करता रहा है। आक्रमण करता रहा है। शोषण करता रहा है। दूसरों को गुलाम बनाता रहा है। यह परंपरा चलती हमने देखी है। भारत मे हमेशा अक्रमण का भय सताता रहा है। उनसे संघर्ष भी मनुष्य इस देश का करता रहा है। इसी लंबी संघर्ष गाथा के बाद भारत देश को भी स्वाधीनता प्राप्त हुई आज हम स्वतंत्र भारत देश में सांस ले रहे लेकिन इसके पीछे बहुत लोगों का बलिदान रहा है। त्याग रहा है। जो आज हमें लोकतंत्र के माहौल में रहने का आनंद मिल रहा है। विभिन्न जैविक आपदाओं से भी हम आज जूझ रहे हैं। जैसे की मार्च 2020 कोरोना नामक महामारी का प्रवेश हुआ जिसने कुछ ही समय में देश बहुत सारे लोगों मे अपना स्थान जमाया जिसके चलते बहुत सारे लोगों को अपने जान देनी पड़ी उससे भी उभरकर आज हम आए है

आज मनुष्य मनुष्य के बीच हम खाई को देख रहे है मनुष्य पराधीनता के समय में और संघर्ष से जूझता था स्वतंत्र भारत में भी वर्ग संघर्ष की कहानी हम देखते है। केवल उसका चेहरा मोहरा बदल गया है। साहित्य की आधुनिक काल कि साहित्यधारा ने विभिन्न पड़ाव से होकर आज के स्वरूप को प्राप्त किया है। उसने पराधीनता को भी देखा ओर स्वतंत्रता ओर भी देखें रहा है। गद और पद दोनों विधाओं में साहित्यकारों ने मौलीक रचनाओं को प्रस्तुत किया है। भारतेंदु युग के पश्चात् द्विवेदी युग और छायावादी युग क्रमशः चलते रहे छायावादी युग में प्रमुख जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला, महादेवी वर्मा जैसे कवियों ने मौलिक रचनाओं को प्रस्तुत किया सूर्यकांत त्रिपाठी निराला प्रगतिशील विचारधारा से संबंधित अपने साहित्य में मौलिक कविता प्रस्तुत करते हैं। जिसमें वे मानव निर्मित वर्ग संघर्ष की कहानी प्रस्तुत कर रहे हैं। कविता का नाम है कुकुरमुत्ता निराला अपनी अनुभूति तथा अपने व्यक्तित्व और कृतित्व का समन्वय यहाँ इस कविता मे दिखाई देता है। महाप्राण के नाम से निराला जी की पहचान है। मूलतः सरोज स्मृति, राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुता कविता लंबी कविताओं से उनकि पहचान विशेष रही कवि निराला ने परिमल की भूमिका में कहा है। मनुष्य की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है। पाना है। और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। अभावग्रस्त जीवन बिताने वाले निराला जिनको

पारिवारिक जीवन में परेशान होना पड़ा पहले महायुद्ध के समय महामारी मे उनकी पत्नी मनोहरा देवी का निधन हुआ इसमें उनके चाचा, भाई और भाभी का भी देहांत हुआ है। इन्हीं संघर्षों के बीच वे आगे बढ़ते रहें और अपनी अनुभूति को प्रस्तुत करते रहे कुकुरमुत्ता कविता उनकी अनुभूति की ही उपज है। मूलतः यह एक पौधा है जो मशरूम, कवच के रूप में पहचाना जाता है। जो सामान्य जमीन पर और सडी गली जगह पर उगने वाला मासल पोधा है। यह भूछत्र भी होता है। इस पौधे को प्रतीक बनाकर निराला कविता 1941 मे लिखी यह कालजयी और लंबी कविता है। प्रगतिशील चेतना का परिचायक है। कविता में गुलाब को पूँजीवादी और कुकुरमुत्ता को आम आदमी वर्ग का प्रतीक माना है। गुलाब अमिर वर्ग बगीचे में माली की मेहनत पर खाद्य कर फुलता है। जो कुकुरमुता कहीं पर भी उगकर आता है। यह वर्ग संघर्ष की कहानी है जिसमें प्राकृतिक और सौंदर्य के प्रतीक के माध्यम से पूँजीवादी व्यवस्था तथा आम लोगों के बीच का संघर्ष उभरकर आया है। उत्पादन के साधनों पर शासक वर्ग का अधिकार इससे कविता का प्रारंभ होता है। नवाब और उसके बाग चित्रण शुरवात से कविता है

"एक थे नवाब"
"पारस से मंगाए थे गुलाब।"

बाग केवल सौंदर्य का स्थान नहीं यह साधनों पर अधिकारों का नेतृत्व है। यहाँ के बाग झरने फौव्वारे सब मालिक के अधिकार का हिस्सा है। गुलाब यहाँ वो है जो श्रम पर आधारित है गुलाब कुकुरमुत्ता पर सीधा आरोप लगाता है गुलाब को सीधे वह बोलता है। अबे सुन बे गुलाब डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट सीधे तौर पर पूँजीवादी व्यवस्था की विलासिता को चुनौती देने का यह चित्रण है। निराला की यह कविता छायावादी अमीरों पर है। सूक्ष्मता से निकलकर यथार्थ की ठोस भूमि पर खड़ी है। गुलाब पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतीक होने के साथ साथ अमीरों का प्रतिनिधि रूप है। जो अहंकारी हैं। इस कविता में समाज में जो विषमता है उसको दर्शाया गया है। इसमें मूलतः शोषण पर शोषित की विजय दिखाई है। यह एक व्यंग्य कविता है। इसमें केवल पूँजिवाद का चित्रण नहीं है बल्कि सामाजिकता का विषय भी है। इसमें मनुष्य जीवन में आई विपदाओं को संकटों को चित्रित किया गया है। आम आदमी के गौरव और प्रतिष्ठा के लिए कविता यहाँ प्रयास किया है इस कविता में स्वतंत्रतापूर्वक वातावरण के प्रभाव का भी चित्रन किया है। जिसमें भारतीयों का अंग्रेजों की ओर से किया जाने वाला शोषण उससे निर्माण मानसिकता साथ ही भारतीय हताशा चित्रन है। देश के अंतर्गत लोग वर्ग संघर्ष में जूझ रहे हैं। आपसी शोषण कर रहे हैं भेदाभेद मचा हुआ सामाजिक खाई निर्माण हो गयी है। गुलाम पसंद मानसिकता का विकास हो रहा है। इस देश की एकता के लिए सामाजिक खाइ समाप्त करना बहुत जरुरी है। यह भी देश स्वतंत्र कराने के लिए जरूरी है। कवि निराला कहते हैं कुकुरमुता गुलाब को कहता है तेरे देखभाल के लिए लोगों को खड़ा होना पड़ता है देखरेख करनी पड़ती है फिर भी तुझ पर कांटे हैं दुसरो को तुझसे केवल काटे ही मिलते हैं ~~काट ही मिलता~~ है उस तरह से पूँजीवादी के प्रति आक्रोश की बात कवि ने कही है। सामान्यतः कुकरमुक्ता यह वह व्यक्ति है। जो आम इंसान है मुह उठा कर खड़ा होना चाहता है इसे उगाया नहीं जाता है। अर्थात गरीब व्यक्ति जो अपने ही बलबूते पर खड़ा है। कुकुरमुत्ता आत्मसम्मान को अभिव्यक्त करता है। निराला मूलतः कार्ल मार्क्स के विचारों को कविता में प्रस्तुत करते हैं। जिसमे संघर्ष बड़ा छोटा भेद को लेकर मार्क्स ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। प्रतीक कविता है गुलाब और कुकर मुता इस प्राकृतिक आपदाओं से लड़ते आए हैं लेकिन मानव निर्मित आपदाओं से हम कब तक लड़ेंगे यह बंद होना जरूरी है सभी मनुष्य जब तक एक होकर एक विचार, एक धर्म, जात की भावना को लेकर नहीं चलेगा तब तक समता मूलक समाज की स्थापना नहीं हो सकती केवल एक ही धर्म होना चाहिए और वह है मानव धर्म एक तरह से यह कविता मानवतावादी मूल्य को प्रस्तुत करने की कोशिश करती है। निर्मित आपदाओं से निजात पा सकते हैं यह ध्यान रखना यहाँ पर ज़रूरी है।

संदर्भ सूची :-

1. निराला की मनसारथकता : डॉ.श्रीमती संतोष कुमार
2. हिंदी साहित्य एक परिचय डॉ.फनीष सिंह
3. निराला की विचारधारा और विवेकानंद: तरुण कुमार

INDO WESTERN RESEARCHERS

ISSN 2349-10-27

Published, Printed, Owned by Sow. Mahananda B. Kamble & Edited by Dr. Anuradha S. Jagdale & Printed at Indo Vision Offset, Binding & Published by Jyotichandra Publication 'Gyandev - Parvati', R-9 / 139/6, Near Vishal School, L.I.C. Colony, Pragati Nagar, Latur. Dist. Latur-413531 (M.S.) India. Contact :- 8484818000, 7276301000.

ISSN 2349 - 1027

Editor In Chief : Dr. Anuradha S. Jagdale